National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(62): 84-87
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

**डॉ. सैयद मुईन**
सहायक प्राध्यापक, कन्नड़ विभाग,
सामाजिक विज्ञान एवं भाषाएँ विभाग,
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यालय,
क्रिस्तु जयन्ती मनित विश्वविद्यालय,
के. नारायणपुरा, बैंगलोर - 560077

**Correspondence:**
**डॉ. सैयद मुईन**
सहायक प्राध्यापक, कन्नड़ विभाग,
सामाजिक विज्ञान एवं भाषाएँ विभाग,
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यालय,
क्रिस्तु जयन्ती मनित विश्वविद्यालय,
के. नारायणपुरा, बैंगलोर - 560077

# सुमित्रानंदन पंत और कुवेंपु के साहित्य में प्रकृति – प्रतीकात्मकता का चित्रण

**डॉ. सैयद मुईन**

**शोधसार :**

प्रकृति भारतीय साहित्य का एक प्रमुख अंग रही है । यह न केवल सौंदर्यबोध को उभारती है, बल्कि मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का भी माध्यम बनती है। हिंदी के प्रख्यात कवि सुमित्रानंदन पंत और कन्नड़ साहित्य के महाकवि कुवेंपु दोनों ही प्रकृति के अनन्य साधक रहे हैं। यह लेख उनके साहित्य में प्रकृति के विविध चित्रों, प्रतीकों और दार्शनिक दृष्टिकोणों का विश्लेषण करता है। जहाँ पंत की कविताओं में प्रकृति सौंदर्य और रोमानी भावों की वाहक बनती है, वहीं कुवेंपु के साहित्य में यह भारतीय संस्कृति, आत्मा और सार्वभौमिक एकता की प्रतीक बनकर उभरती है । सुमित्रानंदन पंत और कुवेंपु दोनों ही अपने साहित्य में प्रकृति के चित्रण के लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी कृतियों में प्रकृति केवल पृष्ठभूमि नहीं बल्कि जीवन का संवेदनात्मक, दार्शनिक और आध्यात्मिक आधार बनती है।

**मुख्य शब्द :** सुमित्रानंदन पंत, कुवेंपु, प्रकृति, काव्य, भारतीय साहित्य, दार्शनिक दृष्टिकोण

**मूल आलेख :**

भारतीय काव्य परंपरा में प्रकृति सदैव एक प्रमुख विषय रही है। संस्कृत काव्य से लेकर आधुनिक भारतीय भाषाओं के साहित्य तक, प्रकृति न केवल पृष्ठभूमि रही है बल्कि संवेदना और चेतना का स्रोत भी बनी है । सुमित्रानंदन पंत (1900– 1977) हिंदी के छायावादी युग के प्रमुख कवि हैं, जिनकी कविताएँ प्रकृति की कोमलता, सौंदर्य और मानवीकरण के अद्वितीय चित्र प्रस्तुत करती हैं। दूसरी ओर, कुवेंपु (कुपल्ली वेंकटप्पा पुटप्पा, 1904 – 1994) कन्नड़ साहित्य के महाकवि हैं, जिन्होंने प्रकृति को एक ब्रह्मांडीय चेतना के रूप में देखा है।

**सुमित्रानंदन पंत के साहित्य में प्रकृति**

उत्तराखंड के अल्मोड़ा ज़िले में सुमित्रानंदन पंत का जन्म 20 मई, 1900 को हुआ था। डीडी के अभिलेखागार में मौजूद एक पुराने साक्षात्कार में उन्हें यह कहते हुए पाया जा सकता है, "सौंदर्य तो हिमाचल के आँचल में पेड़ होकर मेरे घर का मेहमान रहा" । अपना प्रारंभिक जीवन प्राकृतिक सौंदर्य और पहाड़ियों के बीच बिताने से प्रकृति के प्रति उनकी शाश्वत प्रशंसा का जन्म हुआ। और दुनिया की इस सुंदरता पर अपने विचारों को लिखते हुए उन्हें कविता के प्रति प्रेम का अनुभव हुआ। उन्होंने सात साल की उम्र में ही गीत और कविताएँ लिखना शुरू कर दिया था, और यह सिलसिला उन्होंने जीवन भर जारी रखा। कविता, निबंध और नाटकों की अट्ठाईस प्रकाशित कृतियाँ अपने नाम करके उन्होंने कई पुरस्कार अर्जित किए। वे ज्ञानपीठ, साहित्य अकादमी और पद्म भूषण से सम्मानित होने वाले पहले हिंदी कवि थे।

**1. प्रकृति का सौंदर्यबोध**

विलियम वड्र्सवर्थ की तरह, सुमित्रानंदन पंत भी प्रकृति के कवि थे, जिन्हें सही मायने में 'प्रकृति का सुकुमार कवि' कहा गया है। प्रकृति के प्रति उनकी मनोवृत्ति एक भक्त जैसी थी और वे प्रकृति को एक सतत दाता के रूप में देखते थे।

'हाँ धति कितना देती है! धरती माताकितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को !'

हमारे राष्ट्रीय साहित्य में सुमित्रानंदन पंत से अधिक प्रकृति पर लिखने वाला कोई अन्य कवि नहीं है । यदि जयशंकर प्रसाद पर काशी की संस्कृति का गहरा प्रभाव था, यदि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला पर बंगाल के मूल्यों का गहरा प्रभाव था, तो सुमित्रानंदन पंत हिमालय की गोद में बसे थे और प्रकृति से उनका सीधा जुड़ाव था । सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में प्रकृति का वर्णन अत्यंत सौंदर्यपूर्ण और भावनात्मक है । वे हिमालय की गोद में पले-बढ़े थे, जिसका प्रभाव उनकी कविताओं में स्पष्ट दिखाई देता है । 'पल्लव', 'गुंजन', 'ग्राम्या' आदि काव्य-संग्रहों में प्रकृति को मानव के आत्मिक सुख और सौंदर्य के स्त्रोत के रूप में प्रस्तुत किया गया है ।
"मैंने कलियाँ चुन लीं, फूलों का हार बना मृदु पवनों से अपने जीवन को पावन किया ।"

यहाँ कवि न केवल प्रकृति का चित्रण करता है, बल्कि उसमें आत्मा का साक्षात्कार भी करता है । 19वीं सदी के पश्चिमी साहित्य में पनपी रूमानियत का भारत में हिंदी साहित्य की'छायावादी' धारा के अंतर्गत एक विकसित पुनरुत्थान हुआ । इस 'नव-रूमानियत' के चार अग्रदूतों में से एक पंत थे, जिन्हें हिंदी कविता का वड्र्सवर्थ कहा जाता है । रूमानियत के कवियों की रचनाओं को पढ़ने के साथ-साथ, पंत टैगोर, नायडू और अरबिंदो की रचनाओं से भी काफ़ी प्रभावित थे । सुमित्रानंदन पंत छायावाद के प्रमुख कवि माने जाते हैं, जिनकी कविताओं में प्रकृति का अत्यधिक सुकुमार एवं जीवंत चित्रण मिलता है । पंतजी मानते हैं कि प्रकृति ने उन्हें काव्य रचना की प्रेरणा दी । उनकी कविताओं में प्रकृति का संवेदनात्मक, प्रतीकात्मक और रहस्यात्मक रूप बार-बार उभरता है ।

- प्रकृति मानव के सुख-दुख में सहभागी बनती है, कभी उल्लास तो कभी वेदना के स्वरूप में ।
- प्रकृति की छोटी-छोटी वस्तुओं में पंत सौंदर्य और जीवन की प्रेरणा पाते हैं ।
- रोमानी, रहस्यात्मक और मानवीकरण दृष्टिकोण से प्रकृति का समावेश किया गया है ।

बीसवीं शताब्दी का पूर्वार्ध छायावादी कवियों का उत्थान काल था । इसी समय पंत जी इस युग के प्रमुख व्यक्तित्व बन गए, इसलिए इस युग को अन्य कवियों की तरह प्रकृति-उपासकों का युग कहा जाता है । पंत जी अपनी कविता के प्रतीक और बिम्ब के रूप में 'निसर्ग' का प्रयोग करते हैं । उन्होंने ऐसी कविताएँ लिखीं जो मानव मन को अच्छाई और बुराई, सुख और दुःख की मूल परिभाषाओं से ऊपर उठने के लिए प्रेरित करती हैं । वे चाहते थे कि लोग इस मानव जीवन की मधुरता को समझें और प्रकृति से जीवन जीने की कला सीखें ।

कुवेम्पु की तरह पंत को भी प्रकृति में दिव्य ऊर्जा की मौजूदगी का एहसास होता है । उनका यह भी मानना है कि प्रकृति केवल हवा, पानी, पेड़-पौधे और मृत पदार्थ मात्र नहीं है । पंत के करीबी दोस्त और जाने-माने हिंदी आलोचक डॉ. नागेंद्र कहते हैं, "वे उसके भिन्न-भिन्न रूप में एक ही दिखते हैं - एक अविभक्त आत्मा समस्तपृथ्वी का अनुप्रणित कर रही है । असंख्य कोटि काय जीवन कहो युक्ता ये पृथ्वी समस्तीभिन्नता के होते हुए भी एक है । येह अभ्रभेदी पर्वत और धूलकण समुद्र भी एकटा को नष्ट नहीं कर सकते ।"

आदिमानव के मूल्यों को पुनर्जीवित करने में पंत कुवेम्पु के करीब पहुँचते हैं, "उनका स्वभाव आदिम मानव सा हो जाता है ।" जैसे आदिमानव प्रकृति की हर शक्ति को सम्मान की दृष्टि से देखता था, पंत भी प्रकृति में वही स्पंदन महसूस करते हैं । वड्र्सवर्थ की तरह उन्हें भी प्रकृति का एक मौन निमंत्रण महसूस होता है । अपनी कविता 'मौननिमत्रं' में पंत को प्रकृति से ऐसा ही एक निमंत्रण मिलता है, पंत की कविता प्रकृति के साथ अपने गहन और रहस्यमय जुड़ाव के लिए प्रसिद्ध है । उदाहरण के लिए में 'स्वर्णकिरण', प्रकृति के तत्वों को आध्यात्मिक सत्य और मार्गदर्शक के रूप में दर्शाया गया है ।

**2. मानवीकरण और सम्वेदनशीलता**

पंत की विशेषता यह रही कि उन्होंने प्रकृति को मात्र वस्तु न मानकर, एक सजीव सत्ता के रूप में देखा । उनकी कविता में बादल, पवन, फूल, तारे सभी में भावनाएं हैं, चेतना है । उन्होंने कभी शादी नहीं की, लेकिन उनकी कई कविताओं में प्रेम, साहचर्य और स्त्री-पुरुष संबंधों पर उनके विचार स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं । उसी साक्षात्कार में, आप उन्हें यह कहते हुए सुन सकते हैं, "महिला की सुंदरता उसकी भावना में है, न कि उसके शरीर में ।"

**कुवेंपु के साहित्य में प्रकृति**

कर्नाटक के महान साहित्यकार कुवेंपु की रचनाओं में प्रकृति जीवन का अभिन्न अंग है । वे मलनाड क्षेत्र की वर्षावनों, पर्वत और गाँवों की सुंदरता को एक आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से देखते हैं ।कुवेंपु की दृष्टि में धरती ही स्वर्ग है; प्रकृति की सुंदरता पद्य और उपन्यास दोनों में झलकती है ।

उनकी कविताओं में प्रकृति कल्पना– दर्शन, अध्यात्म और एकता का प्रतीक बन जाती है । वे प्रकृति में ईश्वर के अस्तित्व और उसकी दिव्यता को अनुभव कराते हैं. कुवेंपु का साहित्य प्रकृति की

रहस्यमयता, सौंदर्य और मानव जीवन के साथ उसकी गहन अंतर्संबंध को उजागर करता है. कुवेम्पु का ईश्वरीय दर्शन, प्रकृति और कविता के माध्यम से ईश्वर का साक्षात्कार, उनके लेखन का केंद्रबिंदु है। उनका दृढ़ विश्वास है कि प्रकृति का अनुभव करके ही ईश्वर तक पहुँचा जा सकता है। प्रकृति के साथ रहना, प्रकृति का अनुभव करना ईश्वर की आराधना है । प्रकृति का प्रत्येक कण मानव आत्मा का पोषण करता है। कुवेम्पु को प्रकृति और ईश्वरीय दर्शन में जो बात विशिष्ट बनाती है, वह है उनका विश्व बंधुत्व का भाव और समन्वय का दर्शन । कुवेम्पु बार-बार इस बात पर ज़ोर देते हैं कि ईश्वर की अनुभूति किसी निर्मित स्थान (मंदिर/चर्च/मस्जिद) में नहीं, बल्कि प्रकृति के बीच होती है और उस अनुभूति की प्रकृति अनुभवजन्य या अनुभवजन्य नहीं, बल्कि रहस्यमय है।

जब कुवेम्पु ने अपनी कविताएँ लिखना शुरू किया, तब तक यूरोप में रोमांटिक युग तकनीकी रूप से समाप्त हो चुका था और आधुनिकता का बोलबाला था। पश्चिम से प्रभावित होकर, भारतीय लेखन भी शहरी परिवेश की ओर बढ़ रहा था और मनुष्य पर केंद्रित था। ऐसे मोड़ पर, कुवेम्पु ने मानवीय भावना को अपार संभावनाओं का स्रोत माना; एक ऐसे लेखक के रूप में जो पश्चिमी घाट के कोनों से आया था और एक कवि के रूप में अपनी वैयक्तिकता को बनाए रखने के लिए शहरी परिवेश से समझौता करता था, प्रकृति अनिवार्य रूप से केंद्रीय केंद्र बन जाती है। प्रकृति के प्रति उनकी धारणा कभी भी उसे समझौते के बिंदु तक सीमित नहीं रखती थी, बल्कि हमेशा प्रकृति के मुक्तिदायी गुणों को पहचानने और ईश्वर के साथ एकाकार होने के लिए प्रकृति की शक्ति का उपयोग करने की थी।

**1. प्रकृति और विश्वात्मा**

कुवेंपु का दृष्टिकोण वेदांत से प्रेरित है। वे प्रकृति को केवल सौंदर्य का नहीं, बल्कि ब्रह्म की अभिव्यक्ति मानते हैं। उनकी कविता "रामायण दर्शनम्" में प्रकृति को विश्वात्मा से एकरूप बताया गया है। उनका प्रसिद्ध नारा "विश्व मानव" इसी दृष्टिकोण का विस्तार है। "प्रकृति आपके बाहर नहीं है; वह आपके भीतर है। आप और ब्रह्मांड एक हैं।"

यह कथन उनके प्रकृति-दर्शन को दर्शाता है, जिसमें आत्मा और प्रकृति के बीच कोई भेद नहीं है।

**2. संस्कृति और प्रकृति का समन्वय**

कुवेंपु की दृष्टि में भारतीय संस्कृति प्रकृति के साथ सहअस्तित्व की संस्कृति है। वे प्राकृतिक संसाधनों का सम्मान, पेड़ों और नदियों की पूजा को केवल धार्मिक अनुष्ठान न मानकर, एक जीवंत सांस्कृतिक मूल्य मानते हैं।

**तुलनात्मक विश्लेषण**

| पहलू | सुमित्रानंदन पंत | कुवेंपु |
|---|---|---|
| सौंदर्य दृष्टि | रोमानी और छायावादी | दार्शनिक और वेदांतिक |
| प्रकृति का स्वरूप | मानवीकृत और कोमल संवेदनात्मक, मानवीकृत, प्रतीकात्मक | ब्रह्मांडीय और दिव्य आध्यात्मिक, दार्शनिक, एकता का प्रतीक |
| प्रमुख प्रेरणा | हिमालय और प्राकृतिक दृश्य | उपनिषद और वेदांत |
| प्रकृति-संवेदना | आत्मिक और भावनात्मक | सार्वभौमिक और नैतिक |
| विशेषताएँ | छायावाद की कल्पना, मानव-संवेदना की सहभागिता | धरती को स्वर्ग मानना, दर्शन और अध्यात्म की छाया |

**तुलनात्मक विश्लेषण**

पंत और कुवेंपु दोनों ही प्रकृति को जीवन, प्रेरणा, आध्यात्मिकता और सौंदर्य का स्रोत मानते हैं। दोनों कवियों ने अपनी अलग-अलग सांस्कृतिक और भौगोलिक पृष्ठभूमि के अनुरूप प्रकृति के विविध पक्षों को अपनाकर अपनी रचनात्मकता को नई दिशा दी।

**दोनों कवियों में प्रतीकात्मकता तुलना**

सुमित्रानंदन पंत और कुवेंपु की प्रतीकात्मकता साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन दोनों की शैली, उद्देश्य और बोध में अंतर है।

**सुमित्रानंदन पंत की प्रतीकात्मकता**

पंत की कविताओं में प्रकृति के रूप– रंग, झरने, फूल, तारे, संध्या, उषा आदि को प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया गया है; ये वस्तुएं मानव की भावनाओं, इच्छाओं और जीवन के आदर्शों को अभिव्यक्त करती हैं. छायावादी काव्य के रूप में प्रकृति संवेदना, सौंदर्य और रहस्य का प्रतीक है, जिसमें आत्मा की गहराइयाँ और मानवीय भाव तरंगित होते हैं. पंत की कविता में धर्म, दर्शन, नैतिकता जैसे विचारों को प्रकृति के प्रतीकों के माध्यम से प्रकट किया गया है; इस कारण उनके काव्य में गूढ़ता और गहराई मिलती है।

**कुवेंपु की प्रतीकात्मकता**

कुवेंपु की रचनाओं में प्रकृति केवल बाह्य सुंदरता नहीं, बल्कि सांसारिकता, अध्यात्म और मानव– जीवन की एकता का प्रतीक बन जाती है।

उनकी कविता में पर्वत, नदी, वन, खेत आदि प्रतीकात्मक रूप में ईश्वर, आत्मा और मानव के अंतर्संबंध को प्रकट करते हैं। कुवेंपु प्रकृति के प्रतीकों के माध्यम से पूरी सृष्टि को एक परिवार मानते हैं ('विश्व– मानववाद'), जीवन की एकता और अखंडता का भाव उनके प्रतीकात्मक प्रयोगों का मूल है।

**तुलनात्मक विश्लेषण**

| | सुमित्रानंदन पंत | कुवेंपु |
|---|---|---|
| उद्देश्य | संवेदनात्मक, सौंदर्यपरक, आलोचनात्मक | आध्यात्मिक, समावेशी, विश्व–मानवत्व |
| प्रमुख प्रतीक | प्रकृति के उपादान (फूल, तारे, झरना आदि) | सृष्टि के विहंग (वन, नदी, पर्वत, खेत आदि) |
| भाव | व्यक्तिगत अनुभूति, रहस्यात्मकता | सार्वभौमिकता, एकता, सम्पूर्णता |

दोनों कवियों की प्रतीकात्मकता प्रकृति के चित्रण में केंद्रित है, लेकिन पंत के प्रतीक व्यक्तिगत एवं भावुक हैं, जबकि कुवेंपु के प्रतीक व्यापक– विश्व और आध्यात्मिक एकता को साधते हैं.

**उपसंहार :**

सुमित्रानंदन पंत और कुवेंपु, दोनों ही साहित्यकारों ने प्रकृति को केवल काव्य का विषय न मानकर, जीवनदर्शन का माध्यम बनाया। जहाँ पंत की कविताएँ सौंदर्यबोध और भावुकता का उदाहरण हैं, वहीं कुवेंपु की रचनाएँ मानव और प्रकृति के गहरे संबंध का दार्शनिक पाठ प्रस्तुत करती हैं । दोनों के साहित्य में प्रकृति एक चेतन शक्ति बनकर उभरती है, जो पाठकों को न केवल आनंद देती है, बल्कि जीवन के गूढ़ रहस्यों से भी साक्षात्कार कराती है । पंत और कुवेंपु के साहित्य में प्रकृति का चित्रण केवल बाह्य सौंदर्य ही नहीं, अपितु मानव जीवन– सम्बंधी संवेदना, आध्यात्मिकता और दर्शन रूप में प्रस्तुत हुआ है, जो हिन्दी और कन्नड़ साहित्य को समृद्ध करता है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :**


1 पंत, सुमित्रानंदन, पल्लव, राजपाल एंड संज, 1926.

2 पंत, सुमित्रानंदन, ग्राम्या, लोकभारती प्रकाशन, 1954.

3 Kuvempu. *Ramayana Darshanam*. Udaya Ravi Publications, 1949.

4 Natarajan, Nalini. *Handbook of Twentieth-Century Literatures of India*. Greenwood Press, 1996.

5 रामचंद्र गुहा, भारत में पर्यावरण चेतना, पेंगुइन, 2005.

6 Iyengar, K. R. Srinivasa. *Indian Writing in English*. Sterling Publishers, 1984.

7 Dr Nagendra, Sumitranandan Pant, 4th Ed, Agra: Sahitya Ratna Bhandar, 1951, p. 44